ISSN: 2583-0511 (Online)

भैंसों में ग्रीष्मकालीन अमदकाल

डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. अतुल कुमार वर्मा एवं डॉ. मनीष कुमार शुक्ला
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

भैंसों में उच्चतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि दो ब्यांत के बीच का अंतर १४-१५ महीने से ज्यादा ना हो । परन्तु भारत कि जलवायु में ग्रीष्मकालीन ऋतु का मध्यांतर निरंतर बढ़ने से भैंसो में आमदकल कि समस्या और भी गंभीर रूप से बढ़ रही है । इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि ग्रीष्काल के दौरान आवास, आहार एवं अन्य प्रबंधन पर उचित ध्यान देकर इस समस्या को काम किया जा सके ताकि किसानो को इस समस्या से होने वाले नुकसान से बचाया जा सके ।

आवास प्रबंधन

ग्रीष्मकाल में भैंसो का आवास प्रबंधन सबसे ज्यादा जरुरी है इसलिए आवास इस तरह का होना चाहिए कि गर्म हवा अंदर ना आ सके । आवास यदि कच्चा है खासकर यदि छत पर छप्पर हो तो तो गर्मी की समस्या नहीं होती पर फार्म की दीवारें एवं छत पक्की हैं तो तो पंखा लगाया जाना चाहिए । छोटे फार्म पर खिड़कियों पर टाट भिगोकर लगाने से गर्म हवा भी कुछ ठंडी लगती है । यदि बड़ा फार्म है तो बॉक्स फेन तथा फॉगर भी लगाए जा सकते है । आवास के आस पास पेड़ पौधे ज्यादा से ज्यादा लगाने चाहिए ताकि ज्यादा गर्मी ना हो ।

आहार प्रबंधन

पीने का पानी साफ और ताजा होना चाहिए ताकि शरीर कि ऊष्मा को काम कर सके । हरा चारा ज्यादा से ज्यादा देना चाहिए जिससे शरीर में पानी की कमी ना हो । खनिज लवण भी पर्याप्त मात्रा में दिया जाना चाहिए कई खनिज एवं लवण ऐसे है जिससे तनाव को दूर करने में मदद करते हैं ।

अन्य प्रबंधन

भैंसो को यदि संभव हो तो दिन में ज्यादा गर्मी के समय तालाब या नदी में नहलाने के लिए ले जाया जा सकता है । अगर तालाब या नदी न हो तो भैंसो को घर में ही दिन में दो बार नहलाना चाहिए । यदि समय ज्यादा हो गया है फिर भी पशु मद में नहीं आ रहा है तो पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए । कुछ हॉर्मोन प्रोटोकॉल भी है जिनके उपयोग के पश्च्यात निर्धारित समय पर कृत्रिम गर्भाधान से भी पशु को गर्भित किआ जा सकता है ।